गीतिकाव्य का लक्षण

"खण्डकाव्यं भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च" -(साहित्यदर्पण 6/239)
आशय है- महाकाव्य के कथानक के एक खण्ड पर आश्रित रचना ही खण्डकाव्य है।

कुछ मनीषी गीतिकाव्य को संस्कृत काव्यशास्त्र में निर्दिष्ट 'खण्डकाव्य' से एकरूपता दिखाते हैं। किन्तु आधुनिक समीक्षा की दृष्टि से खण्डकाव्य और गीतिकाव्य में भेद होता है। खण्डकाव्य वस्तुवर्णनात्मक अर्थात् बहिरङ्ग को अभिव्यक्त करते हैं। गीतिकाव्य आत्माभिव्यक्ति हैं अर्थात् अन्तरङ्ग हैं। गीतिकाव्य प्रबन्धात्मक के अतिरिक्त मुक्तक भी होता है जिसमें प्रत्येक पद्य स्वच्छन्द भावों से युक्त होता है।

"पूर्वापरनिरपेक्षणापि हि येन रसचर्वणा क्रियते तदेव मुक्तकम्।"
(ध्वन्यालोक)

अर्थात् मुक्तक में प्रत्येक पद्य अपने में स्वतंत्र होता है। ~~से~~ इसके बोध (परिज्ञान) में पूर्व प्रसंग की अपेक्षा नहीं होती। इसमें एक ही पद्य में रस की पूर्ण अभिव्यक्ति अथवा किसी विषय का सांगोपांग निरूपण होता है।

मुक्तक काव्यों में, प्रबन्धकाव्य के समान, रस का निर्वाह करने वाले कवि होते हैं। आनन्दवर्धन ऐसा मानते हैं। अग्निपुराण भी इस तथ्य का समर्थन करता है। किन्तु वामन मुक्तक काव्य को रस से प्रकाशित नहीं मानते।

आधुनिक मनीषियों ने गीतिकाव्य के तीन प्रमुख तत्व माने हैं:- (1) भावातिरेक, (2) कल्पना तथा (3) संगीत।
(1) भावातिरेक में मात्र कोमल भावों का ही आवेगयुक्त स्पन्दन (=स्फुरण) होता है। ~~प्रेम~~ रौद्र भाव का सर्वथा अभाव होता है। प्रेम, शोक, भक्ति, नीति, वैराग्य आदि की भावनाएँ संस्कृत भाषा की गीतियों का विषय है। इन भावों का परस्पर ~~मिश्र~~ समावेश अपेक्षित नहीं है। शोक में शृङ्गार (=स्वीकार्य) या शृङ्गार में नीति या वैराग्य का मिश्रण अनुचित है। किसी एक भाव को केंद्रित करके ही गीतिकाव्य का निरूपण होता है।

(2) संक्षिप्तता – कवि अपने आवेग को अत्यन्त संक्षेप में अभिव्यक्त करता है, तभी वह गीतिकाव्य हो सकता है। इसी संक्षिप्तता के कारण काव्य का साधारणीकरण होता है। कवि की आत्मनिष्ठ अनुभूति जनसाधारण में ~~प्रथा~~ अपनी पैठ बना लेती है। प्रत्येक पाठक उसे अपनी अनुभूति मानने लगता है।

(3) गेयात्मकता –

आरम्भ में यह तत्त्व प्रधान था। गेयात्मक होने पर ही किसी काव्य को 'गीति' कह सकते ~~थे~~ हैं। संस्कृत के कुछ छन्दों में गान तत्त्व अधिक है। इसी कारण इन छन्दों को गीतिकाव्यों में निरूपित किया गया है। जयदेव जैसे कवियों ने शुद्ध संगीतमय रागों का ही प्रयोग किया है।

~~सार~~ गीतिकाव्य के लक्षण के लिए हम साररूप में कह सकते हैं –

"भावानामात्मनिष्ठानां कल्पनावलितं लघु।
स्फुरणं गेयरूपेण गीतिकाव्यं निगद्यते ॥"

अर्थात् भावों का आत्मनिष्ठ रूप हो, कल्पना से युक्त संक्षिप्तता हो तथा गा सकने योग्य रूप में जहाँ स्पन्दन होता है, वहाँ गीतिकाव्य है।